शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा, सदैव इरेडा

(नवरत्न सीपीएसई)

अक्षय क्रांति

(ई-पत्रिका)

'भारतीय संस्कृति एवं परम्पराएं विशेषांक'

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

अक्षय क्रांति

संरक्षक

प्रदीप कुमार दास
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता

माला घोष चौधुरी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक

संगीता श्रीवास्तव
प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा)

सहसंपादक

आलर कुल्लू, उप प्रबंधक (राजभाषा)
तुलसी, वरिष्ठ निजी सचिव (हिंदी)

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा, सदैव इरेडा
(नवरत्न सीपीएसई)

क्र.सं.	विषय	रचना वर्ग	लेख रचिता श्री/सुश्री	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश	–	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा	3
2.	संकल्पों की शक्ति	लेख	स्वेता गुप्ता	4
3.	जीवन संगीत	कविता	संगीता श्रीवास्तव	5
4.	भारतीय संस्कृति एवं परम्पराएं	लेख	ऋषभ मंगल	6-7
5.	संस्कृति अपनी पहचान	कविता	रोमेश कुमार गुप्ता	8-9
6.	भारतीय संस्कृति एवं परम्पराएं	लेख	पीयूष अग्रवाल	10
7.	भारत की सातरंगी संस्कृति एवं परम्पराएं	लेख	आलर कुल्लू	11-12
8.	'हमारे भारत की संस्कृति और परम्पराओं पर एक झलक'	लेख	रिजवान अथर	13-14
9.	भारतीय संस्कृति एवं परम्पराएं	लेख	अनुष्का कुमारी	15-16
10.	भारतीय पर्यटन और धरोहर : अनमोल धरोहर की यात्रा	लेख	गौरव वार्ष्णेय	17-18
11.	अक्षय ऊर्जा	कविता	अथर्व जैन	19
12.	"भारतीय संस्कृति का अद्भुद देन अष्टांग योग"	लेख	प्रवीण कुमार झा	20-21
13.	संस्कार	लेख	रमेश चंद	22-24
14.	आम का पौधा	लेख	रमेश चंद	25-27
15.	भारत के वीर सपूत	लेख	सत्येन्द्र कुमार दूबे	28-29
16.	इरेडा की हिन्दी गतिविधियां	–		30-32

शाश्वत ऊर्जा
इरेडा
IREDA
एक बार इरेडा, सदैव इरेडा
(नवरत्न सीपीएसई)

प्रदीप कुमार दास
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा

संदेश

प्रदीप कुमार दास
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा

प्रिय साथियों,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सबको हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

14 सितम्बर का दिन हिंदी भाषा को समर्पित है । भारत विविधताओं से भरा देश है । हिंदी भाषा भारत के अलग अलग राज्यों के अलग अलग धर्मों, जातियों, संस्कृति, वेशभूषा व खान–पान वाले लोगों को एकता के सूत्र में बांधती है । देश को एक रखती है। इतना ही नहीं हिंदी विदेशों में बसे भारतीयों को आपस में जोड़ने का काम भी करती है । हिंदी अलग अलग क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के दिलों की दूरियां भी मिटाती है। हिंदी इन सभी लोगों की भावनों को जाहिर करने का सबसे सरल व सहज तरीका है। हिंदी की अहमियत और इसके सम्मान के लिए 14 सितम्बर को हिंदी दिवस हर साल मनाया जाता है। इस दिन का मकसद हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए जागरूकता पैदा करना है।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह/पखवाड़ा अपने आप में विशेष है क्योंकि 75 वर्ष पूरे होने पर इसे **'हीरक जंयती'** के रूप में मनाया जा रहा है ।

हिंदी बोलना और लिखना बहुत आसान है । हम रोज स्कूल में, घर में और अपने दोस्तों के साथ हिंदी में बात करते हैं। हिंदी में बात करने से हमें एक–दूसरे को अच्छी तरह समझ पाते हैं । यह हमारी मातृभाषा है और हमें इस पर गर्व होना चाहिए ।

यह दिन हमें हिंदी भाषा के महत्व और इसकी समृद्ध विरासत की याद दिलाता है । ये एहसास कराता है कि हमारे इतिहास, संस्कृति और हमारी पहचान का अटूट हिस्सा है । ये वो भाषा है, जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज की आधुनिक तकनीकी दुनिया तक, हर दौर में हमारी अभिव्यक्ति को सशक्त किया है ।

मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि हिंदी का सम्मान करें। इसे अपनी दिनचर्चा में शामिल करें । आज प्रौद्योगिकी का युग है। हम हिंदी के प्रचार–प्रसार में यथासंभव प्रौद्योगिकी का उपयोग करें। हमें भाषा दक्षता के साथ प्रौद्योगिकी सक्षम भी होना है। इससे हमारे काम की क्षमता कई गुना बढ़ जाएगी।

आइये, हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर हम प्रतिज्ञा करें कि हम अपने सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करेंगे और सभी मन वचन और कर्म में प्रतिबद्ध होकर हिंदी के संवर्द्धन में सहयोग देंगे । हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर मेरी शुभकामनाएं।

संकल्पों की शक्ति

स्वेता गुप्ता,
उप महाप्रबंधक (परियोजना), इरेडा

संकल्पों की शक्ति को इस बात से समझा जा सकता हैं हम जो संकल्प रचते हैं, प्रकृति उसे हमारे सामने हाजिर कर दे देती है। इसे power of attraction] power of manifestation भी कहा जाता है। हमने जो सोचा, वो हुआ पड़ा है।

परंतु, हम इस बात से कितने अनभिज्ञ हैं कि हम creator हैं। हमारे सामने जो भी पारिस्थितियाँ आती है वो हमारी ही संकल्पों की रचना है। हम अपने भाग्य के रचयिता हैं। अगर हम इस नियम को समझ जाएँ, तो हमारी मन–बुद्धि हंस के समान श्रेष्ठ संकल्पों को चुगेंगे और व्यर्थ वा नकारात्मक संकल्पों को छोड़ देंगे। पर आज ऐसा नहीं है। हमारे मन–बुद्धि मे जो संकल्प चलते हैं वो नकारात्मक emotion से जुड़े होते हैं, जैसे की लोभ, ईर्ष्या, अहंकार, भय, आदि।

क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि हमारा सबसे अच्छा साथी या हमारा कट्टर दुश्मन कौन है। जी हाँ, वो कोई और नहीं, बल्कि हमारे ही अंदर चल रहा, हमारा संकल्प है। संकल्प की ताकत इसी बात से आँका जा सकता है कि श्रेष्ठ संकल्प से कोई मौत के मुंह से बहरा आ जाता है और ऐसा भी होता है कि स्वस्थ्य व्यक्ति को मौत के मुंह मे धकेल देता है।

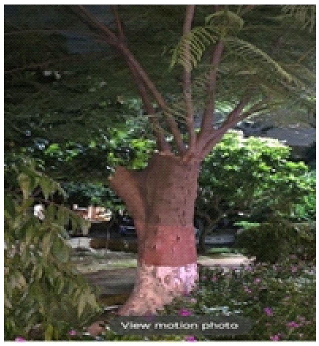

कुछ इस दर्शाये गए पेड़ के चित्र की तरह, जो मेरे आवासीय परिसर में है। ये मोटे ताना वाला पेड़, आँधी और तूफान में जड़ से निकाल गया। कई दिनों तक लेटी हुई अवस्था मे था। फिर इसकी शाखाएँ काटी गयी और सिर्फ मोटा तना खूबसूरती के लिए उसी जगह पे खड़ा कर दिया गया। परंतु आश्चर्य की बात है कि इस सूखे हुए पेड़ में जैसे जान आ गयी। छोटी–छोटी, पतली, हरी टहनियाँ और उसमे हरे–हरे पत्ते निकालने लगे। ये कहानी और ये चित्र संकल्पों की शक्ति को दर्शाता है कि कैसे अधमरे पेड़ ने अपने आप को जीवंत किया।

लियो टॉलस्टाय की यह कहानी याद आती है, जिसमें एक रोगग्रस्थ लड़की को दिखाया गया है, जो अपनी खिड़की से money plant के पत्ते को टूटते हुए देखती है और जीवन के साँसों को उससे पौधे से जोड़कर देखती है। जैसे–जैसे पत्ते कम होते, उसके संकल्प चलते की उसकी साँसे कम को रही है। उसके एक मित्र ने उसकी मनोदशा को जान एक कृत्रिम पत्ता उस पौधे में लगा दिया। पौधे के सभी पत्ते झड़ गए और यह कृत्रिम पत्ता नहीं झड़ा, इससे उसके संकल्प चले कि उसकी बीमारी तो ठीक हो रही है। नकारात्मक संकल्प उसे मौत के करीब ले जा रहा था और जैसी ही सकारात्मक संकल्प चला, वो धीरे धीरे ठीक होने लगी।

अगर हम इस नियम को समझकर positive affirmations लें, हर बात में सकारात्मक व शुद्ध संकल्प रखें और व्यर्थ व अवनति के संकल्पों से दूर रहें, तो हमारा जीवन खुशहाल होगा।

जीवन संगीत

संगीता श्रीवास्तव
प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

संसार तेरा एक शीश महल,
आफताब तेरा जो इधर–उधर
जर्रे–जर्रे में तेरी लौ
चमक रहा आज शीश महल
हर चमक की एक परछाई है
वो भी चमक की हमजोली है ।
दोनों मिलते–जुड़ते डगर–डगर
समझे कोई ना खेल मगर
दोनों का साथ थिरकना ही
जीवन–चित्रपट का दृश्य–पटल
मंजर बदले, दृश्य बदले
हर बदलते परिदृश्य में
जो ना बदले इक चीज मगर ।
तेरा होना, और मेरा होना
तू है तो मैं हूँ
मैं हूँ तो तू है
जो समझ गया ये खेल अगर
बन जाता उसका जीवन तो
मधुर–मधुर संगीत अमर

****

भारतीय संस्कृति एवं परम्पराएं'

ऋषभ मंगल
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा), इरेडा

भारत, जिसे अक्सर विविधता की भूमि के रूप में जाना जाता है, संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों और परंपराओं की समृद्ध ताने–बाने वाला देश है। भारतीय उपमहाद्वीप, अपने लंबे और विविध इतिहास के साथ, दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक, सिंधु घाटी सभ्यता का उद्‌गम स्थल रहा है। सहस्राब्दियों से, भारत अपनी भौगोलिक विविधता, विभिन्न जातीय समूहों के आगमन और विभिन्न परंपराओं और रीति–रिवाजों के समन्वयकारी मिश्रण से आकार लेता रहा है। भारतीय संस्कृति इन विविध तत्वों का एक जीवंत मिश्रण है, जो एक अनूठी और गतिशील जीवन शैली का निर्माण करती है जो निरंतर विकसित होती रहती है।

1. धर्म और अध्यात्म

भारत अपनी गहरी आध्यात्मिक विरासत के लिए जाना जाता है। यह हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म जैसे प्रमुख धर्मों का जन्मस्थान है, जो इसकी सीमाओं से बहुत दूर तक फैल गए हैं। भारत का सबसे बड़ा धर्म हिंदू धर्म केवल एक आस्था नहीं बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है। इसमें अनुष्ठान, त्यौहार और समुदाय की एक मजबूत भावना सहित कई तरह की मान्यताएँ और प्रथाएँ शामिल हैं। वेद, उपनिषद, भगवद गीता और रामायण कुछ ऐसे पवित्र ग्रंथ हैं जो हिंदू प्रथाओं और दर्शन का मार्गदर्शन करते हैं। बौद्ध धर्म और जैन धर्म अहिंसा और तप की वकालत करते हुए सुधार आंदोलनों के रूप में उभरे। 15वीं शताब्दी में स्थापित सिख धर्म एक और महत्वपूर्ण धर्म है जो समानता, सामुदायिक सेवा और एक ईश्वर के प्रति समर्पण पर जोर देता है। धार्मिक मान्यताओं में विविधता के कारण भारत भर में कई त्यौहार मनाए जाते हैं, जैसे दिवाली, होली, ईद, क्रिसमस, गुरु नानक जयंती और बुद्ध पूर्णिमा, जिनमें से प्रत्येक के अपने अनुष्ठान, भोजन और पूजा के तरीके हैं।

2. परिवार और सामाजिक संरचना

भारतीय समाज पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को बहुत महत्व देता है। पारंपरिक भारतीय परिवार अक्सर विस्तारित होता है, जिसमें कई पीढ़ियाँ एक ही छत के नीचे रहती हैं। संयुक्त परिवारों की अवधारणा, हालांकि शहरी क्षेत्रों में धीरे–धीरे एकल परिवारों को रास्ता दे रही है, लेकिन एक मजबूत सांस्कृतिक मानदंड बनी हुई है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। बड़ों का सम्मान, विवाह का महत्व और घर में महिलाओं की भूमिका भारतीय पारिवारिक जीवन के प्रमुख पहलू हैं। विवाह को एक पवित्र कर्तव्य के रूप में देखा जाता है, और अरेंज मैरिज अभी भी आम है, हालाँकि प्रेम विवाह अधिक स्वीकार्य हो रहे हैं। शादियाँ भव्य समारोह होते हैं, जो अक्सर कई दिनों तक चलते हैं, जिसमें रस्में, संगीत, नृत्य और भव्य दावतें शामिल होती हैं।

3. भाषाएँ और साहित्य

भारत दुनिया में कहीं भी बेजोड़ भाषाई विविधता का घर है। भारत का संविधान 22 आधिकारिक भाषाओं को मान्यता देता है, जिसमें हिंदी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी भाषा, साहित्य और मौखिक परंपराएँ हैं जो देश की सांस्कृतिक समृद्धि में योगदान करती हैं। संस्कृत और तमिल जैसी शास्त्रीय भाषाओं में प्राचीन साहित्यिक परंपराएँ हैं, जबकि बंगाली, मराठी, उर्दू और अन्य जैसी आधुनिक भाषाओं ने प्रसिद्ध कवियों, उपन्यासकारों और नाटककारों को जन्म दिया है।

भारतीय साहित्य, चाहे महाभारत और रामायण जैसे प्राचीन महाकाव्य हों या रवींद्रनाथ टैगोर और अरुंधति रॉय जैसे लेखकों की समकालीन रचनाएँ, भारतीय समाज की जटिलताओं और बारीकियों को दर्शाती हैं।

4. कला, संगीत और नृत्य

भारतीय कला के रूप विविध हैं, जो शास्त्रीय से लेकर लोक परंपराओं तक फैले हुए हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत, अपनी दो प्रमुख परंपराओं, हिंदुस्तानी और कर्नाटक के साथ, अपनी जटिल लय और तात्कालिक प्रकृति के लिए जाना जाता है। सितार, तबला, वीणा और मृदंगम जैसे वाद्य भारतीय संगीत का अभिन्न अंग हैं।

भारत में नृत्य केवल एक कला नहीं है, बल्कि कहानी कहने और पूजा करने का एक तरीका भी है। भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी और कथकली जैसे शास्त्रीय नृत्य रूपों की गहरी आध्यात्मिक जड़ें हैं और अक्सर हिंदू पौराणिक कथाओं की कहानियों पर आधारित होते हैं। पंजाब से भांगड़ा, गुजरात से गरबा और महाराष्ट्र से लावणी जैसे लोक नृत्य सांस्कृतिक मोजेक में चार चांद लगाते हैं।

6. त्यौहार और समारोह

भारतीय त्यौहार संस्कृति का एक अभिन्न अंग हैं, जिन्हें पूरे देश में उत्साह और जोश के साथ मनाया जाता है। इन त्यौहारों का अक्सर धार्मिक महत्व होता है, लेकिन ये सामाजिक मेलजोल और सामुदायिक बंधन के साधन के रूप में भी काम आते हैं। दिवाली, रोशनी का त्यौहार, हिंदुओं, सिखों और जैनियों द्वारा मनाया जाता है, जो अंधकार पर प्रकाश की जीत का प्रतीक है। होली, रंगों का त्यौहार, वसंत के आगमन का प्रतीक है और जीवंत रंगों और खुशी के साथ मनाया जाता है। अन्य प्रमुख त्यौहारों में ईद, क्रिसमस, नवरात्रि, दुर्गा पूजा, गणेश चतुर्थी और पोंगल शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता को दर्शाता है। इन त्यौहारों की विशेषता अनुष्ठान, संगीत, नृत्य और दावत है, जो लोगों को उनके मतभेदों के बावजूद एक साथ लाते हैं।

संस्कृति अपनी पहचान

रोमेश कुमार गुप्ता
प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

देश है मेरा अलबेला,
यहाँ नहीं रहता कोई अकेला,

हिन्दू, मुस्लिम, सिख ईसाई,
कई धर्मो से बना ये प्रदेश मेरा।।

विभिन्न भाषाएं यहाँ है बोली जाती ,
ऐसा सर्वगुण संपन्न देश है मेरा,

बड़े का सम्मान, छोटे को प्यार,
हमारी संस्कृति हमें यही सिखाती,

हमेशा प्रेम की बोली बोलो ,
सत्य की राह पर चलना हमें सिखाती ।।

अनेकता में है एकता,
यही हमारी संस्कृति की ही विशेषता

हर राज्य की है अलग संस्कृति ,
फिर भी मानवता का पाठ पढ़ाती

महिमा इसकी इतनी न्यारी ,
सब के मन को भा जाती ।।

होली में रंग लगाए,
रंगो के भेद मिटाये,

दीवाली में दिए जलाये,
मन के अंधेरों को उज्जवल बनाएं,

ईद में गले लगाये,
एक है हम सबको ये बताए ।।

हर खुशी पर्व बन जाती,
हर त्यौहार हमारा इतिहास बताता,

बिहु हो, गरबा हो या भंगड़ा , घुमर हो या लावणी ,
हर व्यक्ति लोक नृत्य कर के जश्न मनाता ।।

वीरो को सम्मान मिले और पूजी जाती है नारी ,
कर्म हमारा ऐसा हो, दूर करे गरीबी और लाचारी,

माँ का दर्जा देते हम अपने इस देश को,
समृद्ध संस्कृति का गौरव है हमारा,

विभिन्न संस्कृति और परंपराओं के लिए,
जाना जाता भारत देश हमारा ।।

****

भारतीय संस्कृति एवं परम्पराएँ

पीयूष अग्रवाल
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा), इरेडा

भारत एक ऐसा देश है, जिसकी संस्कृति और परम्पराएँ विविधता से भरपूर हैं। यह देश अपनी हजारों साल पुरानी सभ्यता के लिए जाना जाता है, जिसने अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक धरोहरों को संजोया है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार यहां की विविधता, सहिष्णुता, और आध्यात्मिकता है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता इसकी विविधता है। यहां विभिन्न धर्म, भाषाएँ, और जातियाँ मिलकर एक सुंदर माला की तरह संगठित होती हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात, ''पूरा विश्व एक परिवार है''।

यह श्लोक भारतीय संस्कृति की व्यापक दृष्टिकोण को प्रकट करता है। भारतीय समाज में परिवार का महत्व अत्यधिक है। संयुक्त परिवार की परंपरा यहां की सामाजिक संरचना को मजबूत बनाती है। इसमें बड़ों का सम्मान और छोटों का स्नेह, दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत विभिन्न धार्मिक मान्यताओं का देश है। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि धर्मों के अनुयायी यहां सदियों से साथ–साथ रहते आए हैं। हर धर्म की अपनी–अपनी परम्पराएँ और त्योहार हैं, जो भारतीय संस्कृति को और समृद्ध बनाते हैं।

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवाव है। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अर्थात, ''हम दोनों (गुरु और शिष्य) का साथ–साथ संरक्षण करें, हम दोनों साथ–साथ भोजन करें, हम दोनों साथ–साथ शक्तिशाली कार्य करें, हमारी विद्या तेजस्वी हो, और हम एक दूसरे से द्वेष न करें।।''

भारतीय कला और साहित्य में भी विविधता का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। यहां की नृत्य, संगीत, चित्रकला, और मूर्तिकला विश्वप्रसिद्ध हैं। भरतनाट्यम, कथक, कुचिपुडी, और ओडिसी जैसे शास्त्रीय नृत्य यहां की सांस्कृतिक धरोहर हैं। भारतीय साहित्य में वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, और गीता जैसे महाकाव्य और ग्रंथ अति महत्वपूर्ण हैं। इनके अलावा, कबीर, तुलसीदास, सूरदास, और मीराबाई जैसे संत कवियों ने भारतीय साहित्य को अनमोल रत्नों से सजाया है।

भारतीय लोक परम्पराएँ भी यहां की संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। हर क्षेत्र की अपनी लोक परम्पराएँ, लोकगीत, और लोकनृत्य होते हैं। राजस्थान का गुमर, पंजाब का भांगड़ा, और महाराष्ट्र का लावणी नृत्य इसकी सुंदर उदाहरणें हैं।

यह धरती हमारी मां है, इसका हम करें सम्मान।
हर त्योहार की मस्ती में, झूमे यह देश महान॥

भारत में हर महीने कोई न कोई त्योहार मनाया जाता है। दीवाली, होली, ईद, क्रिसमस, गुरुपर्व, और बैसाखी जैसे त्योहार यहां की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं। ये त्योहार न केवल धार्मिक महत्व रखते हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जुड़ाव को भी प्रकट करते हैं।

अतः यह कहना उचित होगा कि भारतीय संस्कृति और परम्पराएँ हमारे जीवन का आधार हैं और इन्हें संजोकर रखना हम सबकी जिम्मेदारी है।

****

भारत की सातरंगी संस्कृति एवं परम्पराएं

आलर कुल्लू
उप प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

भारत विभिन्नताओं का देश है,इस देश में उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम की ओर जहां कहीं भी चले जाएँ लोगों की विभिन्न संस्कृति एवं परम्पराएं देखने के लिए मिलती है । भारत ही एक ऐसा देश है जिसमें बहु भाषा–भाषी,कई धर्मपंथी,भिन्न –भिन्न विचार धारा के लोग ,कई राजनीतिक पार्टी , कई जातियाँ ,विभिन्न प्रकार की जलवायु और भौगोलिक खंड आदि विभिन्नता देखने को मिलती है ।

भाषा की दृष्टि से देखें तो भारतीय संविधान की 8वीं सूची में बाईस भाषाएँ जैसे असमिया, बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली, डोगरी आदि शामिल हैं । इसके अलावा क्षेत्रीय आधार पर कई बोली और उप बोलियाँ बोली जाती है । कहा जाता है – कोस कोस पर बदले पानी और चार कोस पर वाणी अर्थात् हमारे देश भारत में हर एक कोस की दूरी पर पानी का स्वाद बदल जाता है और 4 कोस पर भाषा यानि वाणी भी बदल जाती है। इस लिए प्रत्येक भारतीय नागरिक को सभी भाषा भाषियों का सम्मान करना चाहिए ।

भारत धार्मिक दृष्टिकोण से एक धर्म निरपेक्ष देश है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ धार्मिक विविधता और धार्मिक सहिष्णुता को कानून तथा समाज, दोनों द्वारा मान्यता प्रदान की गयी है। भारत के पूर्ण इतिहास के दौरान धर्म का यहाँ की संस्कृति में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। भारत विश्व की चार प्रमुख धार्मिक परम्पराओं का जन्मस्थान है – हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा सिख धर्म। एक सौ चालीस करोड़ भारतीयों का एक विशाल जनसंख्या स्वयं को किसी न किसी धर्म से सम्बन्धित अवश्य बताता है। किंतु इसमें कुछ लोग नास्तिक भी हो सकते हैं। आज भारत में उपस्थित धार्मिक आस्थाओं की विविधता, यहाँ के स्थानीय धर्मों की उपस्थिति तथा उनकी उत्पत्ति के अतिरिक्त, व्यापारियों, यात्रियों, आप्रवासियों, यहाँ तक कि आक्रमणकारियों तथा विजेताओं द्वारा भी यहाँ लाए गए धर्मों को आत्मसात करने एवं उनके सामाजिक एकीकरण का परिणाम है। सभी धर्मों के प्रति हिन्दू धर्म के आतिथ्य भाव के विषय में जॉन हार्डन लिखते हैं, ''हालाँकि, वर्तमान हिन्दू धर्म की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता उसके द्वारा एक ऐसे गैर–हिन्दू राज्य की स्थापना करना है जहाँ सभी धर्म समान हैं। पारसी धर्म और यहूदी धर्म का भी भारत में काफी प्राचीन इतिहास रहा है और हजारों भारतीय इनका अनुसरण करते हैं। पारसी तथा बहाई धर्मों का पालन करने वाले विश्व के सर्वाधिक लोग भारत में ही रहते हैं। भारत के संविधान में राष्ट्र को एक धर्मनिरपेक्ष गणतन्त्र घोषित किया गया है जिसमें प्रत्येक नागरिक को किसी भी धर्म या आस्था का स्वतन्त्र रूप से पालन तथा प्रचार करने का अधिकार है। भारत के संविधान में धार्मिक स्वतन्त्रता के अधिकार को एक मौलिक अधिकार की संज्ञा दी गयी है। भारत के नागरिक आम तौर पर एक दूसरे के धर्म के प्रति काफी सहिष्णुता दर्शाते हैं और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण बनाए रखते हैं। भारत में खान–पान की पसंद और आदतें भी जाति,धर्म और स्थान परिवेश अनुसार भिन्न –भिन्न प्रकार के हैं । यहाँ

भारत में खान–पान की पसंद और आदतें भी जाति,धर्म और स्थान परिवेश अनुसार भिन्न–भिन्न प्रकार के हैं । यहाँ के लोग मुख्य रूप से शाकाहारी और मांसाहारी हैं । भारतीय मांसाहारी ज्यादातर मुर्गा, मछली, और भेड़–बकरी, सुअर, बीफ आदि के मांस को अधिक पसंद करते हैं।

भारत में धर्म, भूगोल, जलवायु और क्षेत्र की सांस्कृतिक परंपराओं के आधार पर भिन्न–भिन्न प्रकार के वस्त्र धारण किये जाते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से, पुरुष और महिला कपड़े सरल लंगोट से विकसित किया गया है, और लॉगक्लॉथ विस्तृत परिधान के लिए शरीर को ढकने के लिए साथ ही उत्सव के मौके अनुष्ठान और नृत्य प्रदर्शन और दैनिक पहनने में इस्तेमाल किया जाता है। शहरी क्षेत्रों में, पश्चिमी कपड़े आम और समान्य रूप से सभी सामाजिक स्तर के लोगों द्वारा पहना जाता है। भारत एक महान विविधता युक्त देश है यहाँ वीव, फाइबर, रंग और कपड़े की सामग्री है। रंग धर्म और रस्म संबंध पर आधारित कपड़ों पहने जाते हैं। उदाहरण के लिए, हिंदू देवियों की पोशाक लाल हरी विविध रंगों की होती है पारसी और ईसाई की शादियों के लिए सफेद कपड़े पहनते हैं। भारत में कपड़े भी भारतीय कढ़ाई की विस्तृत विविधता शामिल हैं।

भारतीय संस्कृति का मुख्य नारा "वसुधैव कुटुंबकम" ने समस्त विश्व को जहां नजदीक लाकर एक बना दिया है उसी प्रकार, अतिथि देवो भवः की भावना से परायों को भी अपना परिवार मानता है । हमारा गौरवमय इतिहास, संस्कृति एवं परम्परा ही है जो भारत को एक सर्वश्रेष्ठ देश बनाता है और यह विभिन्नताओं से परिपूर्ण होकर भी एकता और अखंडता का देश है । जय भारत ! जय इरेडा !

****

'हमारे भारत की संस्कृति और परम्पराओं पर एक झलक'

रिजवान अथर
उप प्रबन्धक (सचिव), इरेडा

भारतीय संस्कृति, जिसे अक्सर कई संस्कृतियों के संयोजन के रूप में जाना जाता है, एक ऐसे इतिहास से प्रभावित रही है जो कई सहस्राब्दी पुराना है, जिसकी शुरुआत सिंधु घाटी सभ्यता और अन्य प्रारंभिक सांस्कृतिक क्षेत्रों से हुई है।

भारतीय संस्कृति के कई तत्वों, जैसे भारतीय धर्म, गणित, दर्शन, व्यंजन, भाषाएं, नृत्य, संगीत और भारतीय फिल्में का दुनिया भर में गहरा प्रभाव पड़ा है। ब्रिटिश राज ने, अंग्रेजी भाषा के व्यापक परिचय के माध्यम से, भारतीय संस्कृति को और अधिक प्रभावित किया।

भारत की भाषाएँ, धर्म, नृत्य, संगीत, वास्तुकला, भोजन और रीति–रिवाज देश के विभिन्न स्थानों पर भिन्न–भिन्न हैं। जो एक हमारे लिए गर्व की बात है। भारत हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म और अन्य धर्मों का जन्मस्थान है। इन्हें सामूहिक रूप से भारतीय धर्म के रूप में जाना जाता है।

आज, हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म क्रमशः दुनिया के तीसरे और चौथे सबसे बड़े धर्म हैं, जिनके कुल मिलाकर 2 अरब से अधिक अनुयायी हैं और संभवतः 2.5 या 2.6 अरब अनुयायी हैं। भारतीय धर्मों के अनुयायी – हिंदू, सिख, जैन और बौद्ध भारत की लगभग 80–82% जनसंख्या हैं।

भारत दुनिया के सबसे धार्मिक और जातीय रूप से विविध देशों में से एक है, जहां कुछ सबसे गहरे धार्मिक समाज और संस्कृतियां हैं। धर्म अपने कई लोगों के जीवन में एक केंद्रीय और निश्चित भूमिका निभाता है। हालाँकि भारत एक धर्मनिरपेक्ष हिंदू–बहुल देश है, लेकिन यहाँ मुस्लिम आबादी बहुत अधिक है। जम्मू और कश्मीर, पंजाब, मेघालय, नागालैंड, मिजोरम और लक्षद्वीप को छोड़कर, सभी 28 राज्यों और 8 केंद्र शासित प्रदेशों में हिंदू प्रमुखता से आबाद हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, केरल, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और असम में बड़ी आबादी के साथ मुसलमान पूरे भारत में मौजूद हैं। जबकि केवल जम्मू–कश्मीर और लक्षद्वीप में मुस्लिम आबादी बहुसंख्यक है। ईसाई भारत के अन्य महत्वपूर्ण अल्पसंख्यक हैं।

भारत में विभिन्न संस्कृतियों वाले 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं और यह दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। भारतीय संस्कृति, जिसे अक्सर कई विभिन्न संस्कृतियों का मिश्रण कहा जाता है, पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैली हुई है और कई हजार साल पुराने इतिहास से प्रभावित है।

भारत के पूरे इतिहास में, भारतीय संस्कृति धार्मिक धर्मों से काफी प्रभावित रही है। प्राचीन भारत और प्रारंभिक हिंदू

धर्म पर पूर्व/दक्षिणपूर्व एशियाई संस्कृतियों का प्रभाव, विशेष रूप से शुरुआती मुंडा और मोन खमेर जैसे ऑस्ट्रोएशियाटिक समूहों के माध्यम से, बल्कि तिब्बती और अन्य तिब्बती–बर्मी समूहों के माध्यम से, स्थानीय भारतीय लोगों और संस्कृतियों पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा।

सदियों से, भारत में बौद्धों, हिंदुओं, मुसलमानों, जैनियों, सिखों और विभिन्न आदिवासी आबादी के बीच संस्कृतियों का एक महत्वपूर्ण मिश्रण रहा है। इंडो–आर्यन भाषाएं और चावल की खेती, जिसे पूवी/दक्षिणपूर्व एशियाई चावल–कृषिविदों द्वारा दक्षिणपूर्व एशिया से पूर्वोत्तर भारत के माध्यम से भारतीय उपमहाद्वीप में एक मार्ग का उपयोग करके पेश किया गया था।

भारत में पीढ़ियों से संयुक्त परिवार प्रणाली की प्रचलित परंपरा रही है। यह तब होता है जब एक परिवार के विस्तारित सदस्य – माता–पिता, बच्चे, बच्चों के पतिध्पत्नी और उनकी संतानें, आदि – एक साथ रहते हैं। आमतौर पर, हमारे भारत देश में, सबसे बुजुर्ग पुरुष सदस्य, संयुक्त भारतीय परिवार प्रणाली का, मुखिया होता है।

हमारे भारत की कुछ अनोखी परंपराओं निम्नलिखित हैं :–

वैदिक मंत्रोच्चारण की परम्परा – वैदिक मंत्रोच्चार हिंदू धर्म के प्राचीन ग्रंथ वेदों का पाठ करने का पारंपरिक तरीका है

योग – जो एक महत्वपूर्ण क्रिया है जिसको हर व्यक्ति को स्वस्थ रहने के लिए अपनाना चाहिए

रामलीला – रामलीला का अर्थ है ष्राम की लीलाष और दशहरा (अक्टूबर–नवंबर) के दौरान पूरे उत्तर भारत में इसका प्रदर्शन किया जाता है।

कुम्भ मेला– कुम्भ मेला हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु कुम्भ पर्व स्थल प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में एकत्र होते हैं और नदी में स्नान करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति १२वें वर्ष तथा प्रयाग में दो कुम्भ पर्वों के बीच छह वर्ष के अन्तराल में अर्धकुम्भ भी होता है।

मुसलमानों की ईद– हिन्दू भाई भी मुसलमानों के इस पर्व में एक साथ खुशी मानते हैं

ईसाई धर्म के त्योहार जैसे क्रिसमस, जिसको हर धर्म के लोग मनाते हैं

जैन और बौद्ध धर्म त्योहारों को भी देश भर में हर्ष व उल्लास से मनाया जाता है

स्वतंत्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस को भी बड़ी धूम धाम से मनाया जाता है

****

भारतीय संस्कृति एवं परंपराएं

अनुष्का कुमारी
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा), इरेडा

भारत एक प्राचीन और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाला देश है। इसकी सांस्कृतिक विविधता और परंपराओं की जड़ें हजारों वर्षों पुरानी हैं, जो इसे विशिष्ट और अद्वितीय बनाती हैं। भारतीय संस्कृति का विस्तार धर्म, कला, साहित्य, संगीत, नृत्य, खान–पान, वस्त्र, और जीवनशैली में दिखाई देता है।

1. धार्मिक और आध्यात्मिक परंपराएं

भारत को विभिन्न धर्मों की जन्मस्थली कहा जाता है, जिनमें हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, और सिख धर्म प्रमुख हैं। यहां विविध धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं का पालन किया जाता है। भारतीय धार्मिक परंपराएं न केवल आध्यात्मिकता को बढ़ावा देती हैं, बल्कि समाज में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों की भी स्थापना करती हैं। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, और चर्च भारतीय धार्मिक परिदृश्य का हिस्सा हैं, जो सहिष्णुता और समन्वय का प्रतीक हैं।

2. त्योहारों की विविधता

भारत में वर्ष भर अनेक त्योहार मनाए जाते हैं, जो समाज को एकजुट करते हैं और सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखते हैं। दीपावली, होली, दशहरा, रक्षाबंधन, मकर संक्रांति, ईद, क्रिसमस, और गुरुपर्व कुछ प्रमुख त्योहार हैं। ये त्योहार न केवल धार्मिक महत्व रखते हैं, बल्कि सामाजिक मेलजोल और आनंद का भी अवसर प्रदान करते हैं। हर त्योहार की अपनी अनूठी परंपराएं और रीति–रिवाज होते हैं, जो भारतीय समाज को रंग–बिरंगा और जीवंत बनाते हैं।

3. कला और हस्तशिल्प

भारतीय कला और हस्तशिल्प विश्व प्रसिद्ध हैं। यहां की पेंटिंग, मूर्तिकला, वस्त्र निर्माण, और कढ़ाई जैसी कलाओं की परंपरा बहुत पुरानी है। मधुबनी पेंटिंग, वर्ली आर्ट, तंजावुर पेंटिंग, और पटोला साड़ी जैसी कलाएं भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट कला शैलियां और हस्तशिल्प होते हैं, जो उस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं।

4. नृत्य और संगीत

भारतीय शास्त्रीय नृत्य और संगीत की परंपरा भी बहुत प्राचीन है। भरतनाट्यम, कथक, कुचिपुड़ी, ओडिसी, और मोहिनीअट्टम जैसी नृत्य शैलियां भारतीय संस्कृति की धरोहर हैं। शास्त्रीय संगीत में हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत की दो प्रमुख परंपराएं हैं। इनके अलावा, लोक संगीत और नृत्य भी भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं।

5. खान–पान की परंपराएं

भारतीय भोजन की विविधता और स्वाद की कोई तुलना नहीं है। प्रत्येक राज्य का अपना विशेष व्यंजन होता है, जो उसकी सांस्कृतिक पहचान को दर्शाता है। उत्तर भारत के परांठे, दक्षिण भारत के डोसा–इडली, पूर्वी भारत के रसगुल्ला, और पश्चिम भारत के ढोकला जैसी विविध व्यंजन भारतीय खान–पान की समृद्धि को दर्शाते हैं। भारतीय मसालों का उपयोग और आयुर्वेदिक खान–पान की परंपराएं भी विश्व प्रसिद्ध हैं।

6. वस्त्र और परिधान

भारतीय परिधान भी सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं। साड़ी, सलवार–कुर्ता, धोती–कुर्ता, और पगड़ी जैसे परिधान भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं। प्रत्येक राज्य का अपना पारंपरिक वस्त्र होता है, जो उसकी सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करता है। भारतीय वस्त्रों में प्रयोग होने वाली बुनाई, कढ़ाई, और डिजाइन की विविधता भी अद्वितीय है।

7. आयुर्वेद और योग

भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद और योग भी भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण परंपराएं हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा और योगासन विश्व भर में लोकप्रिय हैं और स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी माने जाते हैं। ये न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन भी स्थापित करते हैं।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति और परंपराएं इसकी धरोहर को संरक्षित और संजोए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये परंपराएं न केवल भारत को विशिष्ट बनाती हैं, बल्कि पूरे विश्व को सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि का संदेश भी देती हैं। भारतीय संस्कृति की समृद्धि और विविधता को समझना और सम्मान देना हमारी जिम्मेदारी है, ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को इस अनमोल धरोहर का ज्ञान और समझ प्रदान कर सकें।

****

भारतीय पर्यटन और धरोहर: अनमोल धरोहर की यात्रा

गौरव वार्ष्णेय
उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

भारत, अपने प्राचीन इतिहास और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के कारण, विश्वभर के पर्यटकों के लिए एक आकर्षण का केंद्र है। यहां की विविधता, जिसमें विभिन्न धर्म, संस्कृति, परंपराएं, और प्राकृतिक सौंदर्य शामिल हैं, एक अनूठा अनुभव प्रदान करती है। भारतीय पर्यटन और धरोहर न केवल देश के गौरवशाली अतीत को प्रदर्शित करते हैं, बल्कि आधुनिक भारत की झलक भी पेश करते हैं।

धरोहर स्थलों की विरासत:
भारत में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थलों के रूप में चिन्हित 40 से अधिक स्थल हैं, जो इसकी समृद्ध विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं। ताजमहल, आगरा में स्थित, प्रेम और भव्यता का अद्वितीय प्रतीक है, जिसे देखने के लिए लाखों पर्यटक हर साल यहां आते हैं। यह श्वेत संगमरमर से बना मकबरा मुगल वास्तुकला की उत्कृष्टता का परिचायक है।

राजस्थान के जयपुर में आमेर का किला, जो राजपूत वास्तुकला का एक शानदार उदाहरण है, अपनी भव्यता और ऐतिहासिक महत्व के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता है। खजुराहो के मंदिर, जो अपनी जटिल मूर्तिकला और स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध हैं, भारत की कला और संस्कृति की गहरी समझ प्रदान करते हैं।

प्राकृतिक धरोहर:
भारत की प्राकृतिक धरोहरें भी पर्यटन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर केरल के बैकवाटर्स तक, भारत का प्राकृतिक सौंदर्य अनोखा है। उत्तराखंड में नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान जैसे स्थल प्राकृतिक विविधता का अद्वितीय उदाहरण हैं। यहां की जैव विविधता और मनमोहक दृश्य पर्यटकों के लिए एक अद्वितीय अनुभव प्रस्तुत करते हैं।

असम के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, जो एक सींग वाले गैंडों के लिए प्रसिद्ध है, वन्यजीव प्रेमियों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है। इसके अलावा, सुंदरबन के मैंग्रोव जंगल, जो विश्व के सबसे बड़े टाइगर रिजर्व के रूप में जाने जाते हैं, पर्यटकों को प्राकृतिक और वन्यजीव पर्यटन का एक अनोखा अनुभव देते हैं।

सांस्कृतिक धरोहर और उत्सव:
भारतीय संस्कृति के विभिन्न रंगों को समझने के लिए यहां के उत्सवों का अनुभव करना आवश्यक है। राजस्थान का पुष्कर मेला, जहाँ पशुओं का व्यापार और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, सांस्कृतिक धरोहर के महत्व को दर्शाता है। कुम्भ मेला, जो सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन माना जाता है, भारतीय अध्यात्म और धार्मिकता की झलक प्रस्तुत करता है।

भारत की सांस्कृतिक धरोहर न केवल इसके स्थलों और प्राकृतिक संसाधनों में बल्कि इसके जीवन जीने के तरीके, रीति–रिवाजों और उत्सवों में भी परिलक्षित होती है। दीपावली, होली, दुर्गा पूजा, ईद, क्रिसमस आदि त्योहार भारतीय समाज की विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रमाण हैं।

पर्यटन का महत्वः

पर्यटन न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है, बल्कि यह सांस्कृतिक आदान–प्रदान का भी एक माध्यम है। पर्यटक जब भारतीय धरोहर स्थलों का दौरा करते हैं, तो वे यहां की संस्कृति, इतिहास और समाज को समझते हैं। पर्यटन के माध्यम से धरोहर स्थलों का संरक्षण और पुनर्निर्माण भी संभव हो पाता है, जिससे आने वाली पीढ़ियों को भी इन स्थलों का अनुभव प्राप्त हो सके।

भारत का पर्यटन और धरोहरें उसके अतीत की गाथा और वर्तमान की पहचान हैं। यह देश अपने हर कदम पर संस्कृति, इतिहास और आध्यात्मिकता की गहरी छाप छोड़ता है, जो पर्यटकों को बार–बार यहां आने के लिए प्रेरित करता है। भारतीय धरोहर और पर्यटन का यह संगम देश की विविधता और समृद्धि का प्रतीक है।

****

हिन्दी कविता

अथर्व जैन
कक्षा : 7, उम्र : 12 साल

नवनीकरण ऊर्जा के है कुछ छोर

भू तापीय, जल , पवन , जैविक और सौर

सौर की किरणे और पवन की बहार

हर दिशा में लाते है हरित विचार

नाभिकीय और कचरे से भी ऊर्जा हम बनाए

कोयले के जलने से प्रकृति बचाएं

एसडीजी 7 को हम करेंगे पूरा

ऊर्जा के संसाधन को अब न छोड़े अधूरा

आईसीसी मापदंड का हम तो रखते ध्यान

ऊर्जा की बचत का हम करे सम्मान

ऊर्जा के रूप में बिजली हम बनवाए

प्रकृति का ध्यान रखे पर्यावरण बचाए

संसार की ऊर्जा की चुनौती को स्वीकार,

इरेडा की यात्रा है, विकास का उज्ज्वल तार।

****

"भारतीय संस्कृति का अद्भुद देन अष्टांग योग"

प्रवीण कुमार झा,
सहायक महाप्रबंधक (भर्ती)
भारत संचार निगम लिमिटेड

भारतीय संस्कृति का अद्भुद देन है योग । सांस्कृतिक पहचान और प्रतिष्ठा के रूप में योग से सम्पूर्ण विश्व का परिचय हाल के वर्षों में काफी तेजी से फैला है । भारत के प्रति विश्व में एक सकारात्मक वातावरण निर्मित करने, अधिकाधिक भारत को जानने एवं इसके इतिहास, भूगोल, अर्थव्यवस्था और संस्कृति को समझने हेतु विश्व अत्यधिक जागरूक एवं उत्सुक हो रहा है। योग साधना की परंपरा भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही चली आ रही है। पौराणिक मान्यता के अनुसार भगवान शंकर योग के आदि आचार्य माने जाते हैं तो भगवान श्रीकृष्ण योगीराज। वेदों में तो योग का गंभीर विवेचन किया है। योगदर्शन के प्रणेता महर्षि पतंजलि पहले ही सूत्र में लिख देते है कि ''अथ योगानुशासनम'' अर्थात जीवन में अनुशासन लाने वाली क्रियाएं ही योग है । योग हमारे ऋषि–मुनियों एवं सनातन संस्कृति की देन है। योग का उल्लेख ऋग्वेद में भी किया गया है। मोहनजोदड़ों में मिली मोहरों में योग मुद्रा में बैठी एक आकृति देखी गई है। इसी प्रकार गुरु गोरखनाथ, गुरु नानक देव, परमहंस योगानंद, लक्ष्मी नाथ गोसाईं आदि संत योग की सिद्धि के लिए समाज में आदरणीय है ।

योग का अर्थ है आत्मा एवं परमात्मा का मिलन, जीव का ईश्वर से जुड़ना,योग के द्वारा शरीर, मन तथा आत्मा का एकाकार होता है, जिससे आत्म ज्ञान की प्राप्ति होती है। योग भारत की बहुत ही प्राचीन विद्या है । महर्षि पतंजलि नें लगभग दो हजार बर्षों पूर्व इसके सिद्धांतो को अपनी पुस्तक ''योग सूत्र'' में समाहित किया । उन्होंने पूरे योग के प्रणाली को आठ भागों में बांटा जिसके कारण इस योग का नाम ''अष्टांग योग'' पड़ा। अष्टांग योग के अंग यम,नियम,आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान तथा समाधि ये सभी आठ अष्टांग योग के अंग है । इन सभी अंगो का पालन किए बिना कोई भी व्यक्ति योगी नहीं हो सकता है। अष्टांग योग केवल योगियों के लिए नहीं है, जो भी व्यक्ति जीवन में पूर्ण सुखी होना चाहता है उसे अष्टांग योग का पालन करना चाहिए ।

(1) अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्या परिग्रहाः नमाः ये पांच **यम** है। किसी भी प्राणी को मन, वचन तथा कर्म द्वारा कष्ट न देना । सत्य अर्थात जैसा देखा, सुना तथा जाना वैसा ही शुद्ध भाव मन, वाणी और कार्य में दिखे । अस्तेय का अर्थ चोरी न करना, दूसरों के वस्तु को बिना पूछे अथवा गैर कानूनी ढंग से अपनाना चोरी है। ब्रह्मचर्य अर्थात इंद्रिय को उत्तेजित करनेवाले खान –पान, दृश्य–श्रव्य जे अपने को परे रखना। अपरिग्रह का अर्थ न्यूनत्तम धन एवं नैतिक पदार्थों से संतुष्ट होकर अपने जीवन यापन करने से है ।

(2) योग का दूसरा आधारभूत अंग है **नियम**। पतंजलि के अनुसार अष्टांग योग के पांच नियमों में शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान प्रमुख है। शौच अर्थात शुद्धि जो बाहरी तथा आंतरिक दोनों प्रकार की होनी चाहिए। संतोष का अर्थ संतुष्ट रहना, जो है उसी में तृप्त होना। तप अर्थात अपने उद्देश्य की सिद्धि में जो भी कष्ट –बाधाएं आएं उन्हें सहजता से स्वीकार करते हुए निरंतर लक्ष्य की ओर बढ़ना। स्वाध्याय का मतलब जीवन दर्शन के योग्य शास्त्रों का नियमित अध्ययन। ईश्वर प्रणिधान का अर्थ परमगुरु परमात्मा के चरणों में समर्पित होना।

(3) पतंजलि योग का तीसरा अंग है **आसन**। महर्षि पतंजलि कहते हैं – स्थिर सुखम आसनम। पदमासन, भद्रासन या सुखासन किसी भी आसान में सुखपूर्वक बैठना ही आसान है। व्यक्ति के जप, उपासना व ध्यान आदि करते समय किसी भी आसान में स्थिरता और सुखपूर्वक बैठने का लंबा अभ्यास करना चाहिए। यह हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी है।

(4) प्राणायाम:– प्राणों का आयाम अर्थात श्वास की गति का नियंत्रण प्राणायाम है। प्राणायाम चार प्रकार के होते है बाह्य वृति, आभ्यंतरवृति, स्तम्भ वृति एवं बाह्याभ्यांतर प्राणायम ।

(5) प्रत्याहार: अपने मन पर विजय अथवा भौतिकता से विमुख होकर अपने मन तथा पांचों ज्ञाननेंद्रिया को अंतर्मुखी करना और मन को ईश्वर की ओर लगाना ही प्रत्याहार है ।

यम से लेकर प्रत्याहार तक बहिरंग योग है । इसके बाद धारणा, ध्यान तथा समाधि अंतरंग योग के हिस्से है

(6) धारणा: मन की एकाग्रता ही धारणा है । प्रत्याहार के द्वारा इन्द्रियों एवं मन को अंतर्मुखी करते हैं तथा धारणा के द्वारा हम मन को एक विशेष स्थान पर केंद्रित करते हैं। धारणा अपनी अगली कड़ी के रूप में ध्यान में परिवर्तित होता है ।

(7) ध्यान : यह एक यौगिक प्रक्रिया है। ध्यान के बिना किसी भी भौतिक और अध्यात्मिक लक्ष्य में सफल नहीं हो सकते। धारणा में जब किसी विंदु पर, ईश्वर पर मन एकाग्र किया जाय तो यह ध्यान की अवस्था है ।

(8) समाधि : व्यक्ति जब आनंदमय, ज्योतिर्मय व शान्तिमय परमेश्वर का ध्यानकर्ता हुआ इतना तल्लीन हो जाता है कि अपने स्वरूप को भूल जाता है तो यह समाधि की अवस्था है।

अष्टांग योग प्राचीन काल के हमारे ऋषियों एवं मुनियों के उच्चतम स्तर के चिंतन का प्रतीक है । यह केवल योगियों के लिए ही नहीं, अपितु जो भी व्यक्ति जीवन में सम्पूर्ण रूप से सुखी होना चाहता है तथा समस्त विश्व को सुखी देखना चाहता है उन सबके पालन करने योग्य है । भारतीय संस्कृति के बीजमंत्र "लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु" के भावना के अनूरूप इसमें विश्व एवं मानव कल्याण तथा सभी लोगों के आरोग्य हेतु कामना की गई हैं:

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत।।

****

संस्कार

रमेश चंद
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

अच्छा पिता जी मैं चलता हूँ ऑफिस के लिए देर हो रही है। राजेश ने अपने पिता जी के पैर छूते हुए कहा। शर्मा जी के दोस्त वर्मा जी भी सुबह–सुबह उनके घर आए थे। अपने दोस्त के बेटे को अपने पिता जी से आशीर्वाद लेकर ऑफिस जाते देखकर उनका मन बहुत प्रसन्न हो रहा था। वो सोच रहे थे कि उनके दोस्त ने जरूर बहुत अच्छे कर्म किए होंगे जो उनको ऐसी संतान मिली। वर्मा जी को आए भी काफी देर हो गया था तथा वे चाय नाश्ता भी कर चुके थे सो उन्होंने शर्मा जी से जाने की इजाजत मांगी। तभी शर्मा जी का बेटा बोल उठा कि अंकल मेरे साथ ही आ जाइए, मेट्रो में साथ ही चलेंगे। कितनी मिठास थी उसकी आवाज में, कितना अपनापन, कितनी इज्जत कि वो उसको मना न कर सके। शर्मा जी उनके परिवार से इजाजत लेकर राजेश के साथ चल दिए। राजेश ने रिक्शा वाले को आवाज देकर बुलाया और मेट्रो स्टेशन चलने के लिए कहा। वर्मा जी सोचते हुए जा रहे थे कि आज के दौर में ऐसी संतान बहुत किस्मत वालों को ही मिलती है और शर्मा जी ने क्या किस्मत पाई है। सोचते–सोचते उनका ध्यान कल की घटना पर चला गया जो उनके साथ बीती थी। अपने आप को ठगा–ठगा से महसूस कर रहे थे।

कल का पूरा दिन उनका मन अवसाद से भरा रहा था और उन्हें कुछ भी अच्छा नही लग रहा था। उन्हें अपने वर्षों की मेहनत व्यर्थ होती दिख रही थी। वो सोच रहे थे कि मैंने तो आम का पेड़ बोया था, यह बबूल कैसे हो गया। उनकी पत्नी ने अपने बेटे लक्ष्य को कुछ रूपये दिए थे और मार्किट से कुछ सामान लाने के लिए कहा था। बेटा रूपये लेकर चला गया लेकिन शाम तक घर नहीं आया और जब आया तो जो काम उसको बोला था वो भी नहीं किया और रूपये भी खर्च कर दिए। उनकी पत्नी उसको समय और रूपये की कद्र करने के लिए कह रही थी। उसने कुछ न सुना और उल्टा उनकी पत्नी को ही कहने लगा कि मैं तंग आ गया हूँ आप की हर समय कि झिक–झिक से, जब देखो मेरे पीछे पड़े रहते हो। वर्मा जी से यह देखा न गया तो उन्होंने उसको डांटते हुए कहा कि तुम्हारी मम्मी क्या गलत कह रही है। तुम तो वही काम कर रहे हो कि एक तो चोरी उपर से सीनाजोरी। इतना सुनना था कि लक्ष्य बिफर गया और अपने पापा से भी उलझ गया। ऐसा ही जरूरी था तो आपने क्यों नहीं किया यह काम, मुझे क्यों दिया। दिनभर घर पर पड़े रहते हो और जब देखो मुझे काम के लिए बोलते रहते हो। बेटे की बाते सुनकर वर्मा जी सन्न रह गए। उनकी पत्नी उनका मुह देख रही थी और वो अपनी पत्नी का। दोनों को समझ नहीं आ रहा था कि उन्होंने ऐसा क्या कह दिया जो लक्ष्य इतना बिगड़ रहा है। लक्ष्य अपने कमरे में चला गया और दरवाजा जोर से बंद कर दिया।

दोनों अपने को बहुत अपमानित महसूस कर रहे थे और न ही उनसे कुछ बोलते ही बन रहा था। तभी राजेश ने वर्मा जी को हिलाते हुए कहा कि अंकल जी कहाँ खो गए हो, मेट्रो स्टेशन आ गया है। उसने वर्मा जी का हाथ पकड़कर उन्हें आराम से रिक्शा से उतारा और वे स्टेशन के अंदर आ गए। उसने खुद उनके लिए टिकट ली और प्लेटफार्म पर मेट्रो का इंतजार करने लगे। तभी मेट्रो आ गई। मेट्रो में काफी भीड़ थी तो राजेश ने वर्मा जी को वरिष्ठ नागरिकों के लिए आरक्षित सीट पर बिठा दिया और खुद कुछ आगे चला गया। तभी वर्मा जी ने देखा कि आगे बहुत शोर हो रहा

है। जोर जोर से बहस हो रही है। एक सज्जन कोने की सीट पर बैठे थे और उसके साथ लगे शीशे पर पैर लगा कर एक लड़का खड़ा था। उन सज्जन ने कहा कि बेटा पैर नीचे कर लो। ऐसे शीशे पर जूता लगा कर खड़े हो अच्छा नही लग रहा है। वो लड़का उनसे बहस करने लगा कि मेरा पैर तो शीशे पर है और आपको कहाँ लग रहा है। उन सज्जन ने कहा कि मैं कौन–सा कह रहा हूँ कि आपका पैर मुझे लग रहा है, लेकिन देखो क्या यह अच्छा लग रहा है कि मैं बैठा हूँ और आपका जूता मेरी ओर लगा हुआ है। लड़का फिर बोल उठा कि वही तो मैं कह रहा हूँ कि आपको जूता लग कहाँ रहा है जो आप परेशान हो रहे हो। उन सज्जन ने कहा कि ठीक है बेटा मैं ही उठ जाता हूँ क्योंकि मैं ऐसे में बैठ नहीं सकता जब आपके जूते वाला पैर मेरी ओर हो। वो सज्जन अपनी सीट से उठ गए। तभी आसपास खड़े और लोगों ने उस लड़के को खूब डांट लगाई कि आपको शर्म आनी चाहिए कि आपकी वजह से एक बुजुर्ग व्यक्ति अपनी सीट छोड़ रहा है। लड़का बेशर्म बना रहा और बोला कि इसमें मैं क्या कर सकता हूं, इन्होंने सीट खुद से छोड़ी है। तभी 4/5 नौजवान गुस्से में आ गए और बोले कि अगर हम तेरे आगे पैर करके खड़े हो जाए तो तुझे अच्छा लगेगा क्या। तुम्हें मेट्रो में सफर करने का सलीका नही है। क्या इस प्रकार से मेट्रो में अपने जूते लगाओगे। सीधे–सीधे क्यों नहीं खड़े हो जाते, क्यों शीशे पर जूता लगा कर खड़े हो। तभी वर्मा जी ने देखा कि राजेश ने उस लडके को समझाया कि अगर कोई आपके पिता जी के साथ ऐसा करेगा तो क्या आपको अच्छा लगेगा। आप अभी गलती कर रहे हो। उसने उन सज्जन को कहा कि अंकल जी आप क्यों सीट छोड़ रहे हो, आप बैठिए। तभी वो 4/5 नौजवान बोल उठे कि अरे भाईसाहब यह ऐसे नही मानेगा। इसको हम अभी मेट्रो अधिकारियों के हवाले करेंगे तब मानेगा यह। इसको मेट्रो में सफर करना अब वही सिखायेंगे। लड़के पर राजेश की बातों का कुछ असर हुआ और कुछ वह डर गया। उन सज्जन से माफी मांगते हुए बोला कि सॉरी अंकल, आप बैठिए और उसने अपना पैर शीशे से हटा लिया।

वर्मा जी यह सब दूर बैठे देख रहे थे और सोच रहे थे कि आजकल के बच्चों को सस्कार देने में माता पिता कहॉ चूक रहे हैं। बड़ों की इज्जत करना कोई जानता ही नहीं। वैसे सभी तो ऐसे नहीं होते। कल उन्होंने अपने बेटे को और आज इस लड़के को देखा तो परेशान हो गए। उन्हें अपना बचपन याद आ गया। भरेपूरे परिवार में रहते थे जहॉ दादा–दादी, ताया–तायी, चाचा–चाची और उनके बच्चे, पापा–मम्मी तो छोड़ो, दादा–दादी, ताया–तायी भी डांट तो एक तरफ पिटाई भी कर दिया करते थे। मजाल है कि कभी उन्होंने पलट के जवाब दिया हो या उनका बुरा माना हो। स्कूल से आते ही घर के काम उनके लिए तैयार रहते थे। कितने खुशी–खुशी वह काम किया करते थे और बच्चों में होड़ लग जाती थी कि पहले काम कौन पूरा करेगा। अपने घर के बड़ो का सम्मान तो करते ही थे लेकिन पूरे गांव का कोई भी मिल जाए तो उनका भी पूरा सम्मान किया जाता था। स्कूल से आते वक्त अगर कोई गांव का बुजुर्ग कोई सामान उठाकर लाता दिखता था तो बच्चे खुद उनसे जाकर उनका सामान उठाने के लिए मांग लेते और अपने घर जाने के बजाए पहले उनके घर सामान पहुँचा कर आते थे। तब सभी में कितना प्यार था, सभी के लिए कितनी इज्जत थी। फिर से उन्हें अपने बेटे का बुरा बर्ताव याद आ गया और उनकी ऑखे भर आई। तभी राजेश ने कहा कि अंकल जी मेरा स्टेशन आ गया है। आप ध्यान से अपने स्टेशन पर उतर कर घर चले जाना। उन्होंने राजेश को आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम निश्चिन्त होकर जाओ मैं चला जाऊंगा। वो अपने दोस्त शर्मा जी के पास गए भी इसिलिए थे कि उनके साथ उनका समय अच्छा कट जाता है और उनके साथ होने पर अपने गम भूल जाते हैं। लेकिन आज उन्हें बच्चों के संस्कारों में अंतर दिख रहा था। जाने क्यों वो अपने को ही दोषी मान रहे थे कि शायद उन्होंने ही अपने बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं दिए होंगे जो वो हमारी कद्र नहीं करते हैं। फिर सोचने लगे कि क्या हर माँ बाप ने अपने बच्चों को संस्कार नहीं दिए। आजकल तो ज्यादातर बच्चे खुद को ही बहुत ज्ञानवान समझने लगे हैं,

माँ बाप ने उनको पढ़ा लिखा कर इतना लायक बनाया, यह बात भी मानने को तैयार नहीं हैं। सीधा बोल देते हैं कि हमें पढ़ा कर आपने कोई अहसान नहीं किया। यह तो आपका फर्ज था। उन्हें याद आ रहा था कि कैसे वो अपने सहकर्मियों के साथ घूमने जाते थे। सबका परिवार साथ होता था। पूरे भारतवर्ष में लगभग सभी तीर्थों में वह लोग सपरिवार गए थे। बच्चों को भी बचपन से ही अच्छे संस्कार दे रहे थे लेकिन आज बच्चों में ऐसा परिवर्तन क्यों आ रहा, यह उनकी समझ से बाहर था।

राजेश के वर्ताव ने उनके मन पर एक सकारात्मक प्रभाव डाला था और उन्होंने सोच लिया था कि अब वो अपने बेटे के साथ ज्यादा से ज्यादा समय व्यतीत करेंगे। उसको उसके बचपन में किए हुए अच्छे कार्यों की याद दिलाते रहेंगे और बताएंगे कि कैसे उसके वर्ताव से वह पूरे मोहल्ले वालों का चहेता हुआ करता था। उन्हें अपने बेटे को सही राह पर लाने के लिए एक उम्मीद की किरण दिखाई दे रही थी । उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि कुछ भी हो वो अपने बेटे में सोए हुए संस्कारों को जागृत करेंगे। अपनी पत्नी को भी अपने बेटे को सही राह पर लाने के लिए ऐसा ही करने को कहेंगे। एक नया बदलाव लाने के लिए अपने चेहरे पर एक मुस्कान लेकर अव वो अपने घर की ओर खुशी खुशी चल दिए।

****

आम का पौधा

रमेश चंद
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

माँ माँ देखों ये मैं आज क्या लाई हूँ। स्कूल से आते ही अनु चिल्ला चिल्ला कर अपनी माँ को बता रही थी आज स्कूल में निंबध प्रतियोगिता में उसे प्रथम पुरस्कार मिला था, और माँ माँ बताऊं आज ना मैंने पर्यावरण संरक्षण पर निबंध लिखा था। हमारे प्रधानाचार्य को मेरा ही निबंध सबसे अच्छा लगा था। माँ बोली अरे पहले वो तो दिखाओ जो तुम्हें पुरस्कार मिला है। अनु ने पुरस्कार अपने पीछे छुपा रखा था। मॉ के कहने पर उसने माँ को बहुत ही प्रसन्नता के साथ पुरस्कार दिखाया। माँ की खुशी का ठिकाना न रहा। वो एक सुंदर सा आम का पौधा था जो कि एक छोटे से आर्कषक दिखने वाले गमले में लगा हुआ था। माँ ने कहा अनु यह तो आपके स्कूल वालों ने बहुत ही अच्छा पुरस्कार दिया है। अब यह तुम्हारी जिम्मेदारी है कि तुम इसका रोज अच्छे से ख्याल रखोगी। जैसे आपको रोजाना जीने के लिए हवा, पानी और खाना पीना चाहिए वैसे ही इसको भी रोजाना पानी, हवा, धूप और खाद चाहिए। अब यह तुम पर है कि तुम इसका कितना ख्याल रख पाती हो। जब यह पौधा बड़ा हो जाएगा तो इसको गमले के बजाय जो सामने खाली जगह है, वहां पर लगा देना। अनु ने माँ को कहा कि आप चिन्ता न करें, मैं इसका पूरा ख्याल रखूंगी। उस दिन से अनु ने उस गमले में लगे पौधे को अपने कमरे में ही खिड़की के पास रख दिया ताकि उसको ताजी हवा, धूप मिलती रहे। रोजाना आवश्यकतानुसार वह उसमें पानी भी देती थी ।

एक दिन सामने सड़क पर एक माली जा रहा था। अनु ने उसको आवाज देकर रोका और अपने घर ले आई और अपने आम के पौधे को दिखाकर उससे उसके लिए खाद खरीद ली और इसको खाद कब कब डालनी है यह भी जान लिया। अनु अब अपने पौधे की देखभाल अपने घर के एक सदस्य की तरह कर रही थी। अनु के घर में उससे सब खुश थे। उसके पापा ने कहा था कि इस पौधे की देखभाल के लिए यदि अनु को उनसे कोई सहायता चाहिए हो तो वह उन्हें कह सकती है। वह पौधा सबके लिए आर्कषण का केन्द्र बन गया था। वह लोग उसको रोज रोज बढ़ता हुआ देख रहे थे। एक दिन माँ ने देखा कि गमले में कुछ दरार आ गई है और उसमें से पानी बाहर निकल रहा है। माँ ने अनु को बताया कि अब यह पौधा इतना बड़ा हो गया है कि इसको गमले में रखना मुमकिन नहीं है । ऐसा करो कि इसको सामने वाले खाली प्लॉट में लगा दो। तुम यहां से इस पर नजर भी रख सकती हो और वहां यह खुब फलेगा भी। न चाहते हुए भी अनु उस पौधे को सामने वाले प्लॉट में लगा कर आ गई। अब वो अपनी खिडकी के पास ही बैठा करती थी। अरे यह क्या, एक गाय आकर उस पौधे के पत्ते खाने लगी। अनु दौड़ कर बाहर गई और शोर करके उसने गाय को भगाया। गाय के जाते ही वह उस पौधे के साथ लिपटकर रोने लगी। अगर आज मैं न देखती तो गाय तो यह पूरा पौधा ही खा जाती । उसका मन अब घर आने को नहीं हो रहा था। माँ ने देखा कि अनु बहुत देर से अपने कमरे में नहीं है तो उसको खोजने लगी और पाया कि अनु तो अपने पौधे के साथ लिपट कर सो रही थी। माँ को चिपको आंदोलन की याद आ गई जो उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र के चमोली जिले के रेनी गांव में 1973 में शुरू हुआ था। उस समय उत्तराखंड की पहाड़ियों से लकड़ी के ठेकेदारों द्वारा बड़े पैमाने पर पेड़ों को काटा जा रहा था। तब जब पेड़ काटने को ठेकेदार के लोग आते थे तो वहां के स्थानीय लोग पेड़ों के साथ चिपक जाते थे और पेड़ काटने

नहीं देते थे । इस आंदोलन को श्री चंडीप्रसाद भटट और श्री सुंदर लाल बहुगुणा जी ने शुरू किया था । माँ ने देखा कि अनु भी बिल्कुल वैसा ही कर रही है। पौधे के साथ लिपटे रहने के कारण कोई भी गाय या अन्य जानवर अब इसके पत्ते खाने को नही आ पा रहे थे। माँ ने अनु को उठाया और कहा कि घर चलो तो अनु तैयार नहीं हुई कि फिर से गाय आएगी और मेरे पौधे को खा जाएगी। बहुत समझाने पर भी अनु घर जाने को तैयार नहीं हुई तो माँ ने कहा कि क्या सारी रात यहीं बैठी रहोगी तो अनु उदास हो गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो अपने पौधे की रक्षा कैसे करें । इतने में उसके पापा ऑफिस से घर वापिस आए तो देखा कि अनु और उसकी माँ तो बाहर सामने खाली प्लॉट पर ही है। वो भी वहीं पर आ गए और पूछा कि वो लोग वहॉ क्यो खड़े हैं । तो माँ ने सारी बात उनको बता दी और कहा कि अनु अब घर जाने का राजी नहीं है। अनु के पापा ने कहा कि उन्होंने अनु को वायदा किया था कि इस पौधे को बड़ा करने के लिए उनसे कभी मदद चाहिए हो तो वह उनसे कह सकती है। अनु तुमने तो मुझे नहीं कहा लेकिन मैं इसको सुरक्षित रखने के लिए तुम्हारी मदद करूंगा। मैं अभी बाजार जाकर इसके लिए चारों ओर से लगने वाला एक लोहे का पिंजरा ला देता हूं ताकि कोई जानवर इसको खा न सके । अनु बहुत खुश हो गई और मेरे अच्छे पापा कहते हुए उनसे लिपट गई। उसने कहा कि पापा जब तक आप वह जाल इसके आसपास नहीं लगा देते मैं घर नहीं जाऊंगी। उसके पापा उसी समय एक गोलाकार जाल ले आए और इस पौधे के चारों ओर लगा दिया। अब यह पौधा सभी जानवरों से सुरक्षित था। अनु अब घर आ गई ।

दिन बीतते गए और पौधा भी बड़ा हो गया। एक दिन देखा अनु स्कूल से वापिस आई तो देखा कि सामने वाले खाली प्लॉट पर एक कोने में कोई पूजा हो रही है और 8 से 10 लोग वहां बैठे हैं। थोडी देर में वहां पूजा खत्म हो गई और वहां से एक अंकल और आंटी अनु के घर आए और उन्हें कुछ मिठाई दी। अनु समझी नहीं की एक खाली प्लॉट पर पूजा क्यों की और वो लोग किसी मंदिर क्यों नहीं गए पूजा करने। उन्होंने अनु की माँ को बताया कि उन्होंने यह प्लॉट खरीद लिया है और जल्द ही वो वहां अपना घर बनाएंगे। अनु की माँ ने उन्हें चाय पानी पिलाई और उनको हर प्रकार के सहयोग का वायदा किया। उसके बाद वो लोग चले गए।

कुछ दिन बाद अनु ने देखा कि वहां बहुत से लोग आ गए हैं और उस जमीन की खुदाई शुरू कर दी । अनु का ध्यान अपने पौधे की तरफ ही था जो कि अब बड़ा हो चुका था। उस दिन वो लोग वहां से अपना काम खत्म करके शाम को चले गए। अनु ने राहत की साँस ली कि उसका पौधा सही सलामत है । अगले दिन अनु के स्कूल में पीटीएम थी और उसके पापा और माँ भी स्कूल आए थे। अनु की टीचर ने उनको अनु के बारे में जो बताया उसे सुनकर उनका सीना चौड़ा हो गया। टीचर ने कहा कि यहां अनु ने अकेले अपने दम पर तकरीबन 55 पौधे लगाए हैं और रोज उनकी देखभाल भी करती है। अब वो पौधे काफी बड़े भी हो गए है। अनु के लगाए पौधे पर्यावरण संरक्षण में तो सहायक होंगे ही साथ ही आने वाले वर्षों में खूब फल भी देंगे। जो भी इनकी छांव में बैठेगा और जो भी इनके फल खाएगा, अनु को दुआएं ही देगा। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे अनु ने पर्यावरण पर निबंध लिख कर प्रथम स्थान प्राप्त किया था। अनु के पापा और माँ बहुत खुश थे, तो स्कूल के बाद वो उसको घुमाने ले गए और रात का खाना बाहर ही खाकर आए। जब वो घर आए तो देखा कि सामने न तो पौधा है और न ही उसके आसपास लगाया हुआ जाल जो अनु के पापा लाए थे पौधे की सुरक्षा के लिए। अनु के लिए तो काटो तो खून नहीं वाली स्थिति हो गई। उसने रो रो कर पूरा घर सर पर उठा लिया और उसको संभालना उसके माँ और पापा के बस में नहीं हो रहा था। अनु पूरे मोहल्ले का चक्कर लगा आई लेकिन उसे अपना पौधा कहीं नही दिखा। अगले 2 दिन त्योंहारों के कारण

स्कूल की छुटटी थी और सामने वाले प्लॉट पर भी कोई मजदूर काम को नहीं आया था नहीं तो वह उन्हें ही पूछ लेती कि उन्होंने उसका पौधा देखा है क्या । अनु के पापा और माँ भी उदास हो गए थे। अनु की तरह उन्हें भी उस पौधे से प्यार हो गया था। अनु ने खाना पीना छोड़ दिया। कोई उसके सामने उस पौधे को उखाड़ता तो वह वहीं चिपको आंदोलन शुरू कर देती लेकिन पौधा तो कोई उनके पीछे से निकाल कर ले गया। अब अनु का मन कहीं नहीं लग रहा था। पापा को बोली को चलो पुलिस में शिकायत करते हैं कि हमारा पौधा चोरी हो गया है। सभी पड़ोंसियों को पूछा कि उन्होंने किसी को पौधा निकालते हुए देखा है क्या। सभी ने कहा कि उन्हें इस बारे में कुछ नहीं पता। अनु रोए जा रही थी और रोए जा रही थी। उसके माँ और पापा को समझ नही आ रहा था कि वो उसको कैसे मनाएं और कैसे उसका रोना रोकें। अनु की हालत ऐसे हो गई थी जैसे जल बिन मछली। जैसे मछली जल से बाहर आ कर छटपटाती है वैसे ही अनु छटपटा रही थी, उसको बिल्कुल भी चौन नहीं था। कभी अपनी खिड़की को, कभी खाली पड़े खडडे को देखती। कभी घर के अंदर तो कभी घर के बाहर। उसकी यही स्थिति हो गई थी। उसके माँ पापा अपने को बहुत लाचार महसूस कर रहे थे और ऐसे में उसकी कोई मदद भी नही कर पा रहे थे ।

छुट्टियों के बाद बहुत मुश्किल से उन्होंने अनु को स्कूल भेजा। स्कूल में अनु का रो रोकर बूरा हाल था। उसकी टीचर ने घर पर फोन किया कि क्या आपने अनु को कुछ मारा या घमकाया है किसी बात के लिए कि उसका रोना रूक ही नहीं रहा है। अनु के माँ ने सारी बात उनकी टीचर को बताई। टीचर ने अनु को समझाया कि देखो यहां तो तुमने कितने पौधे लगाए हैं, कोई बात नहीं जो एक पौधा कोई ले गया। लेकिन अनु का रोना नहीं रूका। आज उसका मन घर जाने को भी नहीं कर रहा था। स्कूल की छुटटी होने पर घर जाना ही पड़ा। घर पहुंचकर उसने देखा कि जो आंटी अंकल उनके घर पूजा की मिठाई देने आए थे वहीं बैठे हुए थे और माँ से हँस हँस का बाते कर रहे थे । अनु ने उनको नमस्ते किया तो उन्होंने अनु को कहा कि वह उन्हें माफ कर दे। अनु को समझ नहीं आ रहा था कि वो उससे कयों माफी मांग रहे हैं। उन्होंने बताया कि उन्हें जहां पौधा लगा था वहां की खुदाई करनी थी क्योंकि वहां उनके घर की दीवार आ रही थी। चूंकि आप लोग उस दिन यहां नहीं थे और हमने दोपहर आपके स्कूल से आने तक का इंतजार किया कि आपको बता कर ही हम पौधा वहां से हटाएंगे लेकिन उस दिन आप रात तक नहीं आए थे। अनु को याद आया कि स्कूल पीटीएम के बाद उसके माँ पापा उसको घुमाने ले गए थे और रात का खाना वह बाहर से खा कर लौटे थे। उन अंकल ने बताया कि उन्होंने वह पौधा अभी कहीं और लगा दिया है। लेकिन एक बार उनका घर बन जाए तो वह उस पौधे को घर के सामने ही लगा देंगे । तब तक वही लोग उसकी देखभाल भी करेंगे। अनु रोने लगी और उसने अंकल और आंटी को धन्यवाद कहा और गले लगा लिया। अनु का पर्यावरण के प्रति प्यार देखकर वो लोग भी बहुत खुश थे और उन्होंने अनु को वायदा किया कि वो भी उसकी तरह ही खूब पौधे लगाया करेंगे । आज अनु की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। आज उसको उसका खोया हुआ प्यार मिल गया था जो था उसका प्यारा आम का पौधा।

****

भारत के वीर सपूत

सत्येंद्र कुमार दूबे
हिंदी अनुवादक
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड

भारत की धरती हमेशा से वीरों की भूमि रही है, जहां हर पीढ़ी में ऐसे सपूत जन्म लेते हैं जिन्होंने अपने देश की रक्षा और सम्मान के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है। शहीदों की गाथा न केवल वीरता की कहानियां बयां करती है, बल्कि यह देश के प्रति उनके अटूट प्रेम, समर्पण और निस्वार्थ भावनाओं का प्रतीक भी है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आधुनिक काल तक, शहीदों ने अपनी कुर्बानियों से आने वाली पीढ़ियों को एक सुनहरे भविष्य की राह दिखाई है।

भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष में लाखों शहीदों ने अपने प्राणों की आहुति दी। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक, अनेक योद्धाओं ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। मंगल पांडे, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, चंद्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों के नाम हर भारतीय के हृदय में अंकित हैं। भगत सिंह और उनके साथियों ने अपनी जान देकर यह संदेश दिया कि स्वतंत्रता कोई दान नहीं है, इसे प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी, देश को सुरक्षित और एकजुट रखने के लिए हमारे जवानों ने अनेक बार अपने प्राणों की आहुति दी है। 1947–48 के कश्मीर युद्ध, 1962 के चीन–भारत युद्ध, 1965 और 1971 के भारत–पाक युद्ध, और 1999 के कारगिल युद्ध में हमारे सैनिकों ने अपनी वीरता का परिचय दिया। कारगिल युद्ध के दौरान कैप्टन विक्रम बत्रा, लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडे, और ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव जैसे वीरों की शहादत आज भी हमारी यादों में ताजा है। उन्होंने अपने बलिदान से यह सिद्ध किया कि देश की सेवा ही सर्वोच्च धर्म है।

शहीदों का योगदान केवल युद्ध के मैदान तक ही सीमित नहीं है। उन्होंने देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए उन्होंने न केवल बाहरी आक्रमणों का सामना किया, बल्कि आंतरिक चुनौतियों से भी जूझा। उनकी वीरता, त्याग और साहस ने देशवासियों को प्रेरित किया और उन्हें अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया।

हमारे शहीदों का सम्मान करना हमारा नैतिक और राष्ट्रीय कर्तव्य है। उनकी याद में देशभर में कई स्मारक बनाए गए हैं, जैसे दिल्ली का इंडिया गेट, जहां अज्ञात सैनिकों की याद में अमर जवान ज्योति जलती रहती है। इसके अलावा, शहीदों के नाम पर विभिन्न पुरस्कार और पदक दिए जाते हैं, जैसे परमवीर चक्र, महावीर चक्र, और वीर चक्र। यह सम्मान न केवल उनकी बहादुरी को मान्यता देता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरित करता है।

शहीदों की गाथा हमें यह सिखाती है कि सच्ची देशभक्ति का मतलब केवल अपने देश से प्रेम करना नहीं है, बल्कि उसके लिए हर प्रकार का बलिदान देने के लिए तैयार रहना है। शहीदों की कहानियां हमें यह एहसास दिलाती हैं कि स्वतंत्रता और शांति की कीमत बहुत ऊंची होती है, और इसे बनाए रखने के लिए हमें सदैव सतर्क और समर्पित रहना चाहिए। उनकी शहादत हमें प्रेरित करती है कि हम भी अपने देश की सेवा के लिए तत्पर रहें, चाहे वह सेवा किसी भी रूप में हो।

शहीदों की अमर गाथा केवल इतिहास का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है। उनके बलिदान और त्याग की कहानियां हमें यह सिखाती हैं कि सच्चा नायक वही होता है, जो अपनी मातृभूमि की सेवा में अपने प्राणों की बाजी लगाने से भी पीछे नहीं हटता। उनके साहस और निस्वार्थता से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हम भी अपने कर्तव्यों का निर्वाहन पूरी ईमानदारी और समर्पण के साथ करें।

शहीदों की अमर गाथा हमारे लिए एक धरोहर है, जो हमें यह याद दिलाती है कि हमारा वर्तमान उनके बलिदान का परिणाम है। उनके बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता, और हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके सपनों का भारत बने, जहां शांति, स्वतंत्रता, और समानता का वास हो। शहीदों का जीवन और उनकी शहादत हमें यह प्रेरणा देती है कि हम भी अपने देश के लिए कुछ ऐसा करें, जो हमारे आने वाली पीढ़ियों के लिए मिसाल बन सके। उनकी कहानियां हमारे दिलों में सदैव जीवित रहेंगी और हमें अपने देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए प्रेरित करती रहेंगी।

****

इरेडा की हिन्दी गतिविधियां

हिंदी पखवाड़ा, 2024 के दौरान इरेडा कर्मियों के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं/कार्यशाला का आयोजन

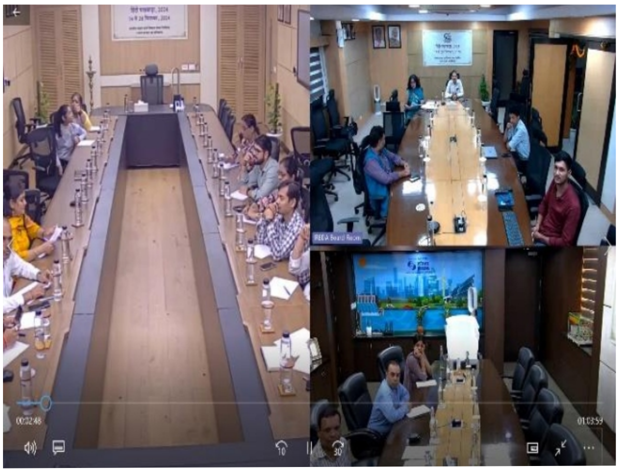

हिंदी पखवाड़ा, 2024 के दौरान इरेडा कर्मियों के बालक/बालिकों के लिए आयोजित कविता पाठ प्रतियोगिता

तिमाही के दौरान आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

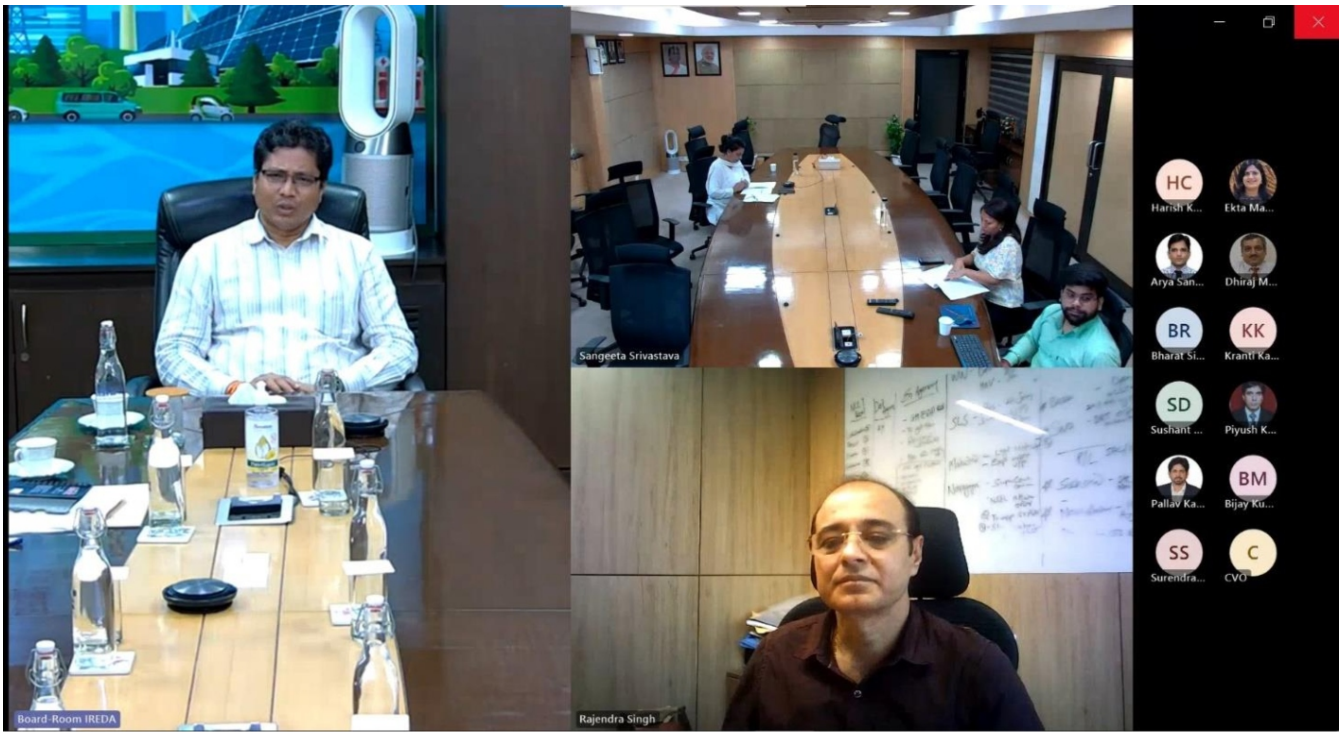

राजभाषाई कार्यों से संबंधित इरेडा के शाखा कार्यालयों का निरीक्षण

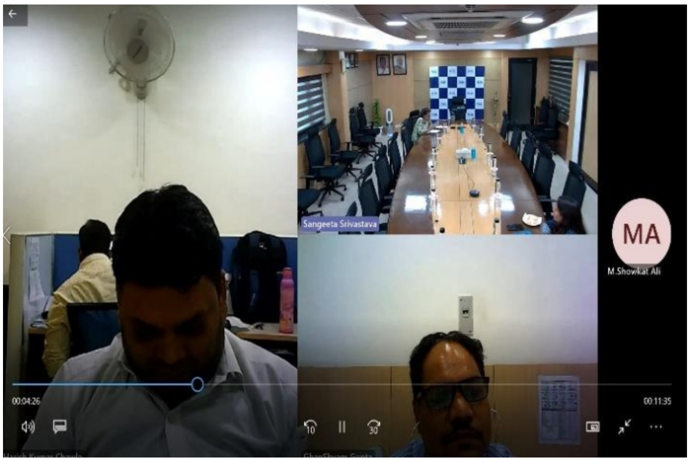

हिंदी के अग्रेषण पत्र, नोटिंग, स्टैंडर्ड पत्र, मूल पत्रों से संबंधित शाखा कार्यालयों के लिए ट्रेनिंग

NOTES

NOTES

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा, सदैव इरेडा
(नवरत्न सीपीएसई)

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड
(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

पंजीकृत कार्यालय/Registered Office
प्रथम तल, कोर-4-ए, ईस्ट कोर्ट, भारत पर्यावास केन्द्र, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003 भारत
दूरभाष/Phone : +91-11-24682206-19 फैक्स/Fax : +91-11-24682202

कॉर्पोरेट कार्यालय/Corporate Office
तीसरी मंजिल, अगस्त क्रान्ति भवन, भीकाएजी कामा प्लेस, नई दिल्ली-110066 भारत
दूरभाष/Phone : +91-11-26717400-12 फैक्स/Fax : +91-11-26717416

इरेडा व्यवसाय केन्द्र /IREDA Business Centre
एनबीसीसी कॉम्प्लेक्स, ब्लॉक नंबर 2, **प्लेट बी,** 7वीं मंजिल, पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली-110023
दूरभाष/Phone : +91-24604157, 24347700 - 24347799

ई-मेल : cmd@ireda.in वेबसाइट : www.ireda.in

@IREDALimited @IREDALtd @iredaofficial